eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

संगीत और काव्य की पारस्परिकता

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

संगीत में वह शक्ति है जो हृदय में नवरसों का संचार कर मानव हृदय में भावुकता, कृरूपा, तन्मयावस्था उत्पन्न कर दे और परिणामस्वरूप हृदय निर्मल हो जाये।

संगीत एक सार्थक प्रवाह है जो सार्थक मानवीय संवाद के प्रवाह से अद्भुत साम्य रखता। प्रवाहमयता के कारण ही संगीत नित नवीन है।

शब्द संक्षेप– संगीत, काव्य, साहित्य, मानव जीवन की सुखानुभूति एवं पारस्परिकता।

Introduction

संगीत और साहित्य मानव जीवन की सुखानुभूति के अपरिहार्य अंग हैं। भर्तहरि के नीत्तिशवकम् श्लोक–12 के अनुसार –

साहित्य संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः ।

अभिप्राय है संगीत और साहित्य – प्रेम से वंचित मनुष्य साक्षात् पशु के समान है, पशु भी ऐसा जो पुच्छ विहीन हो। संगीत और साहित्य अपना–अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुये भी बहुत कुछ अंशों में एक दूसरे के पूरक, सहोदर और अन्योन्याश्रित है।

संगीत अर्थ बोध के लिए काव्य का सहारा लेता है और काव्य प्रभाव वृद्धि के लिए संगीत का। नाद शौष्ठव के लिए काव्य – संगीत का किसी न किसी रूप में सहयोग लेता है। संगीत को यदि –''आकार प्रधान काव्य '' और काव्य को ''सार्थक गीत'' कहें तो उचित ही है। विभिन्न कलाओं में – "संगीत और काव्य' का सर्वाधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है।

संगीत और काव्य के इस सहोदहरत्व के भाव को लेकर ही अगले विवेचन की ओर बढ़ना उचित होगा। प्रस्तुत शोध विषय संगीत और काव्य दोनो से सम्बन्धित होने के कारण इन पर पृथक–पृथक रूप से विचार किया गया है।

संगीत :

संगीत कला की महिमा पर समग्र रूप से विचार करने की दृष्टि से उचित होगा कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उस पर विचार किया जाये। भारतीय चिन्तन की मौलिकता यह है कि सभी कलाओं, शास्त्रों, विधाओं आदि का परम् लक्ष्य भाव्मानुभूति माना गया। वेदों के साथ जुड़कर इन कलाओं, विधाओं ने स्थायी और शास्वत रूप पाया। चिकित्साशास्त्र का आयुर्वेद से, युद्ध–विद्या का धनुर्वेद से,

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

संगीत कला का गान्धर्व वेद से, अर्थशास्त्र का अर्थ वेद से, जुड़कर प्रतिष्ठा पाना इसका प्रमाण है। संगीत कला का गान्धर्व वेद के साथ प्रतिष्ठित हो जाना प्रमाणित करता है कि संगीत केवल लोकरंजन का साधन ही नहीं अपितु आत्मानुभूति का भी साधन था।

प्राचीनता की दृष्टि :

भारतीय संगीत को अनादि माना गया है और वेदों के समान उसकी प्रतिष्ठा हुयी है। संगीत की दो धारायें साथ साथ चलती रही हैं–वैदिक संगीत जो अनादि, अपौरूषेय, अत्यन्त पवित्र, व्यवस्थित, नियमबद्ध और अपरिवर्तनीय था। वेदों का सस्वर पाठ उसका रूप था। यह सस्वर पाठ "सामगान'' कहलाता था। पाश्चात्य विद्वान फेल्वर के अनुसार – सामवेद में लोक गीतों के प्रभावशाली तत्व उपस्थित है। यज्ञ विधियों की प्रभावत्मकता की वृद्धि के लिए युद्ध गीत जैसे लोक गीतों का गायन समागम के साथ प्रचलित रहा है।

जो संगीत मनुष्य द्वारा निर्मित था, जिसमें नियमों की अपेक्षाकृत शिथिलता थी, जो लोकरूचि के अनुकूल और परिवर्तनशील था वह लौकिक संगीत था। इसे 'नशशंसि' कहा गया है। लौकिक संगीत कठोर नियमों में बंधा न होने के कारण देश काल के अन्तर से परिवर्तित होता रहता है।

आध्यात्मिक दृष्टिः

प्रो0 राजेन्द्र बाजपेयी के अनुसार – भारतीय संगीत वेदों का सार है। संगीत संहिता में स्पष्ट रूप से माना गया है – पूजा , ध्यान, जप, इन सबसे श्रेष्ठ गान है तथा गान से श्रेष्ठ कुछ भी नही। संगीत को मोक्षप्रद कहा गया है। संगीत आत्मा को नश्वरता से अनश्वरता की ओर ले जाता है। भारत में संगीत की सगुण उपासना हुयी है उसे वीणा वादिनी के रूप में साकार पूजा गया है।

''सा विद्या या विमृत्तये' संगीत ही है। वीणा पुस्तकधारिणी अर्थात माँ सरस्वती का सम्पूर्ण रूप ब्रह्ममय है तथा उसके आराधक दो रूपों में उसकी आराधना करते हैं – पुस्तक धारिणी अर्थात शब्द शब्द ब्रह्म तथा वीणा धारिणी अर्थात नाद ब्रह्म। संगीत अपने में पूर्ण तभी होता है जब शब्द और नाद के माध्यम से उसका रसमय स्वरूप आन्तरिक दृष्टि से दर्शन देने लगे।

आत्मा के लिए संगीत का वही महत्व है जो शरीर के लिए व्यायाम का है। ईश्वर रूप होने के कारण संगीत साध्य भी है और साधन भी। पं0 के0 वासुदेव शास्त्री के अनुसार कुशल वीणा वादक संगीत शास्त्र के ज्ञाता तथा तालज्ञ अपने प्रयासों से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

वीणा वादन तत्वज्ञः श्रुति जाति विशारद :

तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्ष मार्ग प्रयच्छति ।।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि :

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से संगीत की महिमा कम नही हैं। इसकी सत्ता सार्वभौम है। स्वरों के माध्यम से संगीतकार श्रोता को दिव्यलोक में ले जाता है। आनन्द,शोक, भय, आशा, तृष्णा, क्रोध, विनय, प्रेम, आदि भावों को संगीत के स्वर तत्काल उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। प्रत्येक के जीवन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

में अनेक क्षण ऐसे आते हैं जब हम मानसिक तनावों, कष्टदायक मनःस्थितियों संवेगों से घिर जाते हैं जब जीवन में निराशा के अतिरिक्त शेष कुछ नही रहता ऐसे समय में संगीत संजीवनी का कार्य करता है।

दार्शनिक सूजन वैगन के अनुसार–''संगीत आत्माभिव्यक्ति नही है वरन् मानसिक तनाव, संकल्प, संवेद आदि काव्यवस्थापन और प्रतिरूपण हैं। संगीत उन संवेदो और मनहस्थितियों को प्रस्तुत कर सकता है जिन्हे हमने अनुभूत नही किया है।

दार्शनिक दृष्टिः–

दार्शनिक दृष्टि के आधार पर जीवन का परम लक्ष्य सत्यम शिवम् सुन्दरम की अनुभूति करना है। संगीत में वह क्षमता है जिसके द्वारा यह दिव्य अनुभूति मानव मात्र को हो सकती है। संगीत में ध्यान आकर्षण का जादू है, उसमें आत्मकेन्द्रित और आत्मसात करने की विशेष क्षमता है। संगीत के सष्ट स्वरों का आरोह–अवरोह हृदय के तन्तुओं को स्पर्श कर श्रोताओं को परम सौन्दर्य को दिव्य अनुभूति तत्काल कराने में समर्थ होता है।

संगीत का प्रभाव केवल श्रोता तक सीमित नही है। इस दिव्य कला में जड़ चेतन को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता है। "पशुवेत्ति – शिशुवेत्ति गान रस फणी" सभी अर्थात पशु–पक्षी गान रस में सिंचित रहे हैं।

संगीतानन्द जीवन मुक्ति के आनन्द के समान है। आनन्द को ईश्वर का स्वरूप कहा गया है। संगीत के द्वारा असीम सुख की प्राप्ति होती है।

जीवन के चार पुरूषार्थ – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के चार साधन बताये गये हैं – भगवदभजन से धर्म, राजा से मिले हुये सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से लाभ, और ईश्वर प्रसाद के रूप में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

परन्तु संगीत एकमात्र ऐसा साधन है जिससे इन चारों पुरूषार्थों की प्राप्ति एक साथ सम्भव हो सकती है।

संगीत मानव के लिए मनोरंजन का साधन, संतों के लिए मार्गदर्शक, प्रेमियों के जीवन का मित्र, विरहाग्नि से पीड़ित व्यक्तियों को सात्वंना देने का एक अद्भुत उपहार है। संगीत की कलात्मक गहराइयों, कठिनतम् बारीकियों एवं नियमों की उपेक्षा करके साधारण विशेषताओं पर ही दृष्टिपात करें तो अवश्य हम ही मानव जीवन के लिए संगीत की महत्ता समझ आ जायेगी।

नाद संगीत का आधार तत्व है। नाद में मनुष्य के चित्त को एकाग्र करने की अद्भुत क्षमता है। नाद से स्वर – लय का समविष्ठिकरण भारतीय संगीत की विशेषता है। सृष्टिकर्ता ने स्वर – लय को मानव जीवन का अवलम्ब माना है। संसार की समस्त चराचर सृष्टि में स्वर और लय का अद्भुत समागम देखा जा सकता है।

भाव पक्ष की दृष्टि से संगीत के अतिरिक्त किसी में वह सामर्थ्य नही है जो हृदय में आग और प्राणों में तड़ पैदा कर सके।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

संगीत में वह शक्ति है जो हृदय में नवरसों का संचार कर मानव हृदय में भावुकता, कृरूपा, तन्मयावस्था उत्पन्न कर दे और परिणामस्वरूप हृदय निर्मल हो जाये।

संगीत एक सार्थक प्रवाह है जो सार्थक मानवीय संवाद के प्रवाह से अद्भुत साम्य रखता। प्रवाहमयता के कारण ही संगीत नित नवीन है।

संक्षेप में प्रो० रामलखन शुक्ल के अनुसार –

"भारतीय संगीत मुक्ति का संदेश वाहक है। संगीत से निर्भरानन्द प्राप्त होता है। ऐसा जो समस्त बंधनों से मुक्त और ब्रह्मानन्द सविद्य है। भारतीय संगीत के सिद्धान्त विस्तृत है, वह नियमबद्ध है इसकी शिल्प विधि कठिन है, फिर भी भारतीय संगीत सिर्फ कला ही नहीं अपने आप में जीवन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. 'जनरल आफ म्यूजिक एकाडमी – मद्रास – पृ0 – 20
2. सौन्दर्य – राजेन्द्र बाजपेयी, पृ0 174 ।
3. याज्ञवल्क्य स्मृति–3/1150 दृष्टव्य दृ संगीत शास्त्र के0 वासुदे शास्त्री,पृ0–3
4. 'फिलास्फी इन न्यू की – सूजन लैगर – दृष्टवयं भारतीय सौन्दर्य का तात्विक विवेचन और ललित कलायें – प्रो0 रामलखन शुक्ला पृ0 दृ 168 ।

.